सम्पूर्ण सृष्टि पर का नियन्त्रण कर रहे हैं। 'अमरकोश' के अनुसार **विभूति** का अर्थ विलक्षण ऐश्वर्य है।

श्रीभगवान् के विलक्षण ऐश्वर्य अथवा दैवी शक्ति के प्राकट्य का बोध निर्विशेषवादियों अथवा विश्वदेवतावादियों को नहीं हो सकता। प्राकृत-जगत् और वैकुण्ठ-जगत् में नाना प्रकार की अभिव्यक्तियों के रूप में श्रीभगवान् की ही शक्ति बिखरी हुई है। अब श्रीकृष्ण उस तत्त्व का वर्णन करते हैं, जिसका अनुभव साधारण मनुष्य को प्रत्यक्ष होता है। साधारण मनुष्य उन्हें जान सकें, इसी उद्देश्य से उन्होंने अपनी सविशेष विलासमय शक्ति के एक अंश का यहाँ वर्णन किया है।

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च।।२०।।

अहम् =मैं; **आत्मा** =आत्मा; **गुडाकेश** =हे अर्जुन; **सर्वभूत** =सम्पूर्ण जीवों के; **आशयस्थितः** =हृदय में स्थित; **अहम्** =मैं; **आदिः** =मूल कारण; **च** =और; **मध्यम्** =मध्य; **च** =भी; **भूतानाम्** =सम्पूर्ण जीवों का; **अन्तः** =अन्त; **एव** = निःसन्देह; **च** =और।

अनुवाद

हे गुडाकेश! मैं सम्पूर्ण जीवों के हृदय में स्थित आत्मा हूँ तथा जीवमात्र का आदि, मध्य और अन्त भी मैं ही हूँ।।२०।।

तात्पर्य

इस श्लोक में अर्जुन को **गुडाकेश** कहा गया है, जिसका भाव है कि वह निद्रा रूपी अन्धकार को विजय कर चुका है। जो मनुष्य अज्ञानरूप निद्रा में मग्न हैं, वे प्राकृत तथा वैकुण्ठ जगत् में श्रीभगवान् के प्राकट्यों को नहीं समझ सकते। अतः श्रीकृष्ण का अर्जुन को इस प्रकार सम्बोधित करना सारगर्भित है। श्रीभगवान् अर्जुन के लिए अपनी नाना विभूतियों का वर्णन करने को प्रस्तुत हैं, क्योंकि वह (अर्जुन) इस अज्ञान-तम से ऊपर है।

सबसे पहले श्रीकृष्ण अर्जुन को सूचित करते हैं कि अपने प्रधान अंश (परमात्मा विष्णु) के रूप में वे सम्पूर्ण सृष्टि के आत्मा हैं। प्राकृत सृष्टि से पूर्व परमेश्वर श्रीकृष्ण अपने अंश से पुरुषावतार ग्रहण करते हैं। इसी पुरुषावतार से सारी सृष्टि का उपक्रम होता है। अतएव वे महत्तत्त्व की आत्मा हैं। महत्तत्त्व (समग्र भौतिक शक्ति) सृष्टि का निमित्त नहीं है; महाविष्णु के महत्तत्त्व में प्रवेश करने पर ही सृष्टि होती है। अतः वे ही आत्मा हैं। रचित ब्रह्माण्डों में प्रवेश करके वे जीवमात्र में परमात्मा के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। अपने अनुभव के आधार पर हम जानते हैं कि जीवात्मा के देह का अस्तित्त्व उसमें चैतन्य स्फुलिंग की उपस्थिति पर निर्भर करता है। चैतन्य स्फुलिंग के बिना देह की सत्ता नहीं हो सकती। इसी भाँति, परमात्मारूप में श्रीकृष्ण के प्रविष्ट हुए बिना प्राकृत सृष्टि भी विकसित नहीं हो सकती।